आलोक मेहता

आ घर लौट चल भारतीय डॉक्टर

भारतीय अंगूठा दिखाने लगें तो ब्रिटेन जैसे देशों की स्वास्थ्य सेवाएं बर्बाद हो जाएं

ब्रिटेन में भारतीय मूल के लगभग 25 हजार डॉक्टर काम कर रहे हैं। आधुनिक उदार अर्थव्यवस्था के बावजूद सामान्य अंग्रेजों को सार्वजनिक क्षेत्र के सरकारी अस्पतालों की सुविधाओं पर निर्भर रहना होता है और पिछले 50 वर्षों में भारतीय डॉक्टरों ने लाखों संपन्न श्वेत अंग्रेजों को जीवनदान दिया है। वैसे इंग्लैंड में दुनिया के अन्य देशों के डॉक्टरों की संख्या भी करीब एक लाख के आसपास है। केवल 6 वर्ष पहले सन 2000 में ब्रिटिश स्वास्थ्य मंत्रालय को महसूस हुआ था कि उनके सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की कमी है और तब 7,500 विशेषज्ञ डॉक्टर एवं 2,000 जनरल फिजीशियन श्रेणी वाले डॉक्टरों की भर्ती हुई थी। उन्हें काम करते पांच साल ही पूरे हुए हैं और अब ब्रिटिश सरकार ने बाकायदा भेदभावपूर्ण नीति अपनाते हुए फरमान जारी कर दिया है कि गैर यूरोपीय डॉक्टर को देश में काम करने के लिए 'वर्क परमिट' लेना होगा। नतीजा यह होगा कि अब राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा से जुड़ने के इच्छुक डॉक्टरों को वर्क परमिट के लिए चक्कर लगाने होंगे। यही नहीं, किसी भी नियोक्ता को पहले यह प्रमाणित करना होगा कि इस तरह के डॉक्टर स्थानीय यूरोपीय समुदाय में उपलब्ध नहीं हैं। सरकार की नई नीति ने विदेशी डॉक्टरों को विचलित किया है। भारतीय मूल के डॉक्टरों के संगठन ने इस फैसले के विरुद्ध पिछले दिनों स्वास्थ्य मंत्रालय के समक्ष प्रदर्शन किया है। संगठन का आकलन है कि इस निर्णय से फिलहाल अस्पतालों में काम कर रहे कम से कम 4 हजार डॉक्टरों और 850 बेरोजगार युवा डॉक्टरों को जल्द ही देश छोड़कर जाना होगा।

इसमें कोई शक नहीं कि यूरोपीय देशों में दिनोंदिन बेरोजगारी बढ़ रही है। इसलिए स्थानीय युवकों को रोजगार देने की चिंता अन्य यूरोपीय देशों की तरह ब्रिटिश सरकार को भी होगी। लेकिन रोजगार के नए अवसर खोजने और वर्तमान स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और विस्तार के कार्यक्रम बनाने के बजाय आदिम यूरोपीय ढंग से गैर यूरोपीय लोगों को निकाल बाहर करने की नीति गलत अंतर्राष्ट्रीय संदेश है। सारी तरक्की के बावजूद सच यही है कि ब्रिटिश स्वास्थ्य सेवा हाल के वर्षों में लड़खड़ाई है। पिछली बार ब्रिटेन-यात्रा के समय मुझे ऐसे कस्बे में जाने का अवसर मिला था, जहां चिकित्सा सुविधा चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा थी और अंततोगत्वा एक डॉक्टर ही निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीत गया था। अस्पतालों में प्रतीक्षा सूची और समय निरंतर बढ़ता जा रहा है। दूसरी तरफ यूरोपीय डॉक्टरों के मुकाबले भारतीय या अन्य एशियाई डॉक्टर अधिक संवेदनशील, विश्वसनीय, योग्य और सक्षम सिद्ध हुए हैं। ऐसी स्थिति में योग्यता के बजाय पासपोर्ट आधार होने पर सामान्य नागरिकों को अच्छी चिकित्सा सुविधा कैसे मिल सकेगी?

> अब ब्रिटिश सरकार ने बाकायदा भेदभावपूर्ण नीति अपनाते हुए फरमान जारी कर दिया है कि गैर यूरोपीय डॉक्टर को देश में काम करने के लिए 'वर्क परमिट' लेना होगा।

जहां तक युवा डॉक्टरों का सवाल है, ब्रिटिश सरकार भारत जैसे देशों में बड़े पैमाने पर अपनी मेडिकल शिक्षा की मार्केटिंग करती है। यही नहीं, ब्रिटेन में मेडिकल प्रैक्टिस के लिए भी अलग से परीक्षा लेती है और इस परीक्षा के लिए भी करीब 5,000 पौंड (करीब 3,50,000 रुपये) वसूल कर लेती है। जो युवा डॉक्टर किसी तरह भारी भरकम फीस और ब्रिटेन में रहकर थोड़ी योग्यता बढ़ाने के लिए कुछ लाख रुपये कर्ज आदि लेकर खर्च करते हैं, उन्हें इतनी सुविधा भी नहीं मिल सकेगी कि वे कुछ वर्ष काम करके कर्ज अदा कर सकें। मोटा अनुमान यह है कि नई नीति के कारण 15 हजार में से आधे युवा ऐसे हैं जिन्हें शिक्षा और प्रशिक्षण को बीच में छोड़कर अलविदा कहना होगा।

इस रवैये से एक बात स्पष्ट है कि ब्रिटेन और जर्मनी जैसे संपन्न देश अपनी सुविधानुसार विदेशियों को 'अतिथि' के रूप में बुलाते हैं और मतलब निकलते ही धक्का देना चाहते हैं। भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में सर्वाधिक योग्य तकनीशियन पश्चिम के आकर्षण में सेवा करने पहुंच तो जाते हैं लेकिन बाद में छला हुआ महसूस करते हैं। यह रुख अफ्रीका और खाड़ी के देशों से भी बदतर है। असल में पश्चिमी देशों की मानसिकता अब भी साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी है। अपने स्वार्थों के लिए वे अधिकाधिक फरेब और शोषण करने से नहीं चूकते। भारत जैसे देशों में उन्हें बड़ा बाजार दिखता है। इसी तरह भारतीय प्रतिभा और मेहनत से भी वे प्रभावित रहते हैं और उसका उपयोग अपनी सुविधानुसार करना चाहते हैं। नेताओं, महारानी या राजकुमार अथवा व्यापारियों को भारत भेजकर ऐतिहासिक संबंधों की दुहाई दी जाती है लेकिन भारत को कोई तकनीक देनी हो अथवा भारतीयों के हितों की रक्षा का मुद्दा उठे तो उनके तेवर बदल जाते हैं। अब भारत स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अपने दरवाजे खोल रहा है। यूरोपीय देशों से लोग भारत आकर इलाज कराना सस्ता समझने लगे हैं। जिस काम के लिए उन्हें अपने देश में 20 लाख रुपये खर्च करने पड़ते, वही ऑपरेशन या अन्य चिकित्सा सुविधा उन्हें 3 या 4 लाख रुपये में भारत में मिलने लगी है। ऐसी स्थिति में समय रहते भारतीय स्वास्थ्य सेवा से जुड़े नीति निर्धारकों, चिकित्सा विशेषज्ञों और संसद को कोई ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि भारत में 'स्वास्थ्य सेवा' के नाम पर रियायती मूल्यों पर मिली जमीन और अन्य संसाधनों से विकसित अस्पतालों में विदेशियों के इलाज के लिए अतिरिक्त विशेष फीस वसूली जाए और भारतीयों को कम दामों पर चिकित्सा सुविधा दी जाए। इसी तरह प्रवासी डॉक्टरों के समर्थन में ऐसा माहौल क्यों नहीं बन सकता कि भारतीय डॉक्टर परदेश का निरर्थक मोह छोड़कर अपने देश में अच्छे ढंग से काम करने के अवसर पा सकें। जो पिछले वर्षों के दौरान अमेरिका और ब्रिटेन में वर्षों तक रहने के बाद कई डॉक्टर वापस आए हैं और उन्हें यहां अधिक प्रतिष्ठा और धन अर्जित करने में सफलता मिली है। अमेरिका में भी प्रशासन की भेदभावपूर्ण नीतियों के विरुद्ध आप्रवासी आंदोलन के लिए सड़कों पर उतर आए हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भेदभावपूर्ण नीतियों का विरोध जारी रखते हुए भारत सरकार ऐसी अभिनव योजनाएं शुरू क्यों नहीं करती, जिनसे बड़ी संख्या में भारतीय डॉक्टर स्वदेश लौटने लगें। आखिरकार, भारत जैसे विशाल देश में स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार और विस्तार की व्यापक संभावनाएं हैं। आर्थिक क्षेत्र में उदारीकरण का मतलब केवल विदेशी पूंजी, टेक्नोलॉजी, सामान, सब्जी और फल का आयात ही क्यों माना जाना चाहिए? यदि हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है तो हमें अपने योग्य और सक्षम डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, शिक्षाविदों के लिए यूरोपीय स्तर के वेतन तथा सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए। जो शोध कार्य लंदन या न्यूयॉर्क में संभव है, वह आधुनिक टेक्नोलॉजी के युग में भारत में संभव क्यों नहीं है? मजा तो तब आए जब संपन्न देशों में बैठे डॉक्टर और वैज्ञानिक बड़ी संख्या में पश्चिम की भेदभावपूर्ण नीतियों तथा आप्रवासियों के लिए निरंतर बन रहे कठोर नियमों का प्रतिकार करते हुए भारत लौटने लगें। ऐसा होने पर उन देशों की स्वास्थ्य और अन्य सेवाएं चरमराने लगेंगी। जो लोग ब्रिटेन या अमेरिका में आप्रवासियों का विरोध कर रहे हैं, उन्हें करारा झटका तभी लगेगा जब भारतीय उन्हें अंगूठा दिखाने लगें और भारत सरकार भी अपने नियमों को थोड़ा कड़ा करके भारतीयों के बल पर अपनी अर्थव्यवस्था तथा सार्वजनिक सेवाओं को मजबूत बनाए। ●